व्याख्यान - 7

स्नातक तृतीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक विकास

मैथिली कथा साहित्यक विकासमे भुवनेश्वर सिंह भुवनक कथा सेहो सामाजिक धरातल पर आधारित कथावस्तु लए हमरा समक्ष अबैत अछि। हिनक दूजनी कथा मूल नाम आ छद्म नाम सँ लिखल भेटल अछि। शैली कपिलेश्वरक सभा, शून्य, शैद छाया, न्याय, मन्दिर आदि महत्वपूर्ण कथा विभिन्न पत्र-पत्रिका आ कथा संग्रहमे भेटैत। हिनक प्रसिद्ध कथा "शून्य" एक सामान्य प्राणीक जीवनमे उत्पन्न विभिन्न परिस्थिती पर आधारित कथा अछि। कथानायकक कथन "शान्त ओ एकान्त स्थानमे, जखन सँ जेना हमर मोन चंचल भऽ उठैत अछि, ताहिना कोलाहलमय प्रदेशक नीरवतो हमरा उद्विग्न ओ अशान्त बना दैत अछि" अस्थिर मानसिकताक परिचायक बुझि पड़ैत अछि। शिव शंकर श्रीनिवास हिनक कथा पर अपन विचार राखैत लिखैत छथि — "भुवनजी अपन कथामे मूलतः सामाजिक आस्था अनास्थाके स्पष्ट करैत समाजमे होइत विभिन्न तरहक कुचक्र आ ओहि सँ होइत स्थिति दुःस्थितिक दिस ध्यान आकृष्ट करैत ~~समाजमे होइत विभिन्न तरहक कुचक्र ओ ओहि~~ स्वच्छ सामाजिक स्थिति चाहैत छथि"।

(2)

Page No.
Date: / /

मैथिलीक मौलिक कथा लेखनक प्रारम्भिक अवधि मे संस्कृतनिष्ठ भाषाक प्रयोग मैथिली कथा जगमे देखल गेल। एहन कथा लेखनमे हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज'क नाम प्रमुखताक संग लेल जाइत अछि। हिनक कर्णफूल, वैधव्यक जीवन, ई जारी रहत, ईश्वरीय रक्षा आदि प्रमुख कथाक रूपमे प्राप्त होइत अछि। ई संस्कृतनिष्ठ भाषाक प्रयोग मे कतेक पारंगत छलाह तकरा हिनक ईश्वरीय रक्षा कथामे देखल जा सकैत अछि -

" हुनक पिता टेढ़न झा, अनाथ झा कें विष मिश्रित मधुर देने छलथिन, जे खाइताहि देरी सब गोटे मृत्यु धामक प्रस्थान कय जयताह "। हिनक भाषा प्रयोग पर मोहन भारद्वाज अपन आलेख मे लिखने छथि- " हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज' अपन कथाक 'वैधव्यक जीवन' मे लिखैत छथि - " माधवी जखन मुग्धिता-वस्थामे छलीह तखनहि हुनक सौभाग्य चिन्ह नष्ट कए देल गेलन्हि। माधवीक निष्फल वासना अतृप्त तृष्णा, निहत आशा निदाघ- संतप्त कुसुम जकाँ दहि गेलन्हि। हिनक व्यथित विलाप, कुररी जकाँ करुणा- क्रन्दन, असह्य - यंत्रणा, सन्दष्ट हृदय के विदीर्ण कए देलक "।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक